**National Journal of Multidisciplinary Research and Development**
**ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.nationaljournals.com**
**Volume 1; Issue 5; November 2016; Page No. 06-10**

# 1942: की जनक्रांति

**प्रवीण पाठक**

पी–एच0डी0, विकास एवं शांति अध्ययन, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत।

**सारांश**

भारत छोड़ो आन्दोलन जिसे अगस्त क्रांति भी कहा जाता हैं, भारतीय जनता की वीरता और लड़ाकूपन की अद्वितीय मिसाल है अगस्त 1942 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने अंग्रेजों को 'भारत छोड़ो' की चुनौती दी और उन्हें भारत छोड़ने पर मजबूर करने के लिए अभूतपूर्व स्तर पर जन आंदोलन छेड़ दिया। भारत छोड़ो आंदोलन एक सशक्त ज्वार की भांति सारे देश में फैल गया। उसने समाज के सभी वर्गों के लोंगों को अपने में समेट कर उनमें देशभक्ति की उत्कट भावना और देश के लिए मर मिटने की अदम्य लालसा पैदा कर दी। यह तो "निर्भीक लड़ाई", "एक खुला विद्रोह", "तेज और छोटी" लड़ाई होने वाली थी, जो इस देश को आजादी की ओर ले जाने वाली थी। इस आंदोलन में प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर कार्रवाई करने के लिए आजाद था।

**मूल शब्द:** जनक्रांति, भारत छोड़ो आंदोलन, समानान्तर सरकार, क्रिप्स प्रस्ताव।

## प्रस्तावना

### दूसरा विश्व युद्ध

दूसरा विश्व युद्ध सितंबर 1939 में आरंभ हुआ जब जर्मन प्रसारवाद की हिटलर की नीति के अनुसार नाजी जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया। इसके पहले मार्च 1938 में वह आस्ट्रिया और मार्च 1939 में चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार कर चुका था। ब्रिटेन और फ्रांस ने हिटलर को खुश रखने के लिए बहुत कुछ किया था, मगर अब वह पोलैंड की सहायता करने के लिए बाध्य हो गए। भारत की ब्रिटिश सरकार राष्ट्रीय कांग्रेस या केंद्रीय सभा के चुने हुए सदस्यों से परामर्श किए बिना फौरन युद्ध में शामिल हो गई। राष्ट्रीय कांग्रेस को फासीवादी आक्रमण के शिकार देशों से पूरी सहानुभूति थी। वह फासीवादी विरोधी संघर्ष में लोकतान्त्रिक शक्तियों की सहायता करने को तैयार थी। मगर कांग्रेस के नेताओं का सवाल यह था कि एक गुलाम राष्ट्र द्वारा दूसरों के मुक्ति–संघर्ष में साथ देना किस प्रकार संभव था? इसलिए उन्होंनें मांग कि भारत को स्वाधीन घोषित किया जाए या कम से कम भारतीयों को समुचित अधिकार दिया जाएँ ताकि वे युद्ध में सक्रिय भाग ले सकें। ब्रिटिश सरकार ने इस मांग को मानने से इंकार कर दिया तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों और राजा–महराजाओं को कांग्रेस के खिलाफ खड़ा करने का प्रयास किया। इसलिए कांग्रेस ने अपने मंत्रिमंडलों को आदेश दिया कि वे त्यागपत्र दे दें। अक्तूबर 1940 में गांधीजी ने कुछ चुने हुए व्यक्तियों को साथ लेकर सीमित पैमाने पर सत्याग्रह चलाने का निर्णय किया। सत्याग्रह को सीमित इसलिए रखा गया कि देश में व्यापक उथल–पुथल न हो और ब्रिटेन के युद्ध प्रयासों में बाधा न पड़े। वाइसराय के नाम एक पत्र में गांधीजी ने आंदोलन के उद्देश्यों की व्याख्या इस प्रकार की:-

> "कांग्रेस नाजीवादी की विजय की उतनी ही विरोधी है जितना कि कोई अंग्रेज हो सकता है। लेकिन उसकी आपत्ति को युद्ध में उसकी भागीदारी की सीमा तक नहीं खीचा जा सकता और चूंकि आपने तथा भारत दृसचिव महोदय ने घोषणा की है कि पूरा स्वेच्छा से युद्ध प्रयास में सहायता कर रहा है, इसलिए यह स्पष्ट करना आवशक हो जाता है कि भारत की जनता का विशाल बहुमत इसमें कोई दिलचस्पी नहीं रखता है। वह नाजीवादी तथा भारत पर शासन कर रही दोहरी निरंकुशता में कोई अंतर नहीं करता।''

सत्याग्रह करने वाले पहले व्यक्ति विनोबा भावे थे। मई, 1941 तक 25,000 से अधिक सत्याग्रही गिरफ्तार किए जा चुके थे। वर्ष 1942 में विश्व राजनीति में दो महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। यूरोप तथा अधिकांश यूरोप में पोलैंड, बेल्जियम, हालैण्ड, नार्वे और फ्रांस पर अधिकार कर चुकने के बाद नाजी जर्मनी ने 22 जून 1941 को सोवियत संघ पर हमला बोल दिया। 7 दिसंबर को जापान ने पर्ल हार्बर में एक अमेरिकी समुद्री बेड़े पर आकस्मिक हमला किया तथा जर्मनी और इटली की ओर युद्ध में शामिल हो गया। उसने तेजी से फिलीपीन, हिन्दचीन, इन्डोनेशिया, मलाया और बर्मा पर अधिकार हो गया। इससे युद्ध भारत की सीमाओं तक आ पहुंचा। हाल में रिहा हुए कांग्रेसी नेताओं ने जापानी आक्रमण की निंदा की और कहा कि अगर ब्रिटेन फौरन प्रभावी शक्ति भारतियों को सौप दे और युद्ध के बाद पूर्ण स्वाधीनता का वचन दे तो वे भारत कि रक्षा और राष्ट्रों के हितों के लिए सहयोग करने के लिए तैयार हैं। अब ब्रिटिश सरकार को युद्ध प्रयासों में भारतीयों के सक्रिय सहयोग कि बुरी तरह आवश्यकता थी। ऐसा सहयोग पाने के लिए उसने एक कैबिनेट मंत्री सर स्टेफोर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में मार्च 1942 में एक मिशन भारत भेजा।

### क्रिप्स प्रस्ताव और असफलता

मार्च 1942 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल ने एक घोषणा कि "युद्ध मात्रिमंडल (war cabinet) ने भारत के विषय में एक मत होकर कुछ निर्णय किए हैं और हाउस आफ कामन्स के नेता सर स्टेफोर्ड क्रिप्स (Sar Stafford Crips ) भारत जाकर स्वयं निजी विचार–विमर्श से अपने आपको संतुष्ट कर इस निर्णय से लोंगों को अवगत कराएंगे और यह निर्णय एक न्याय–पूर्ण और अंतिम निर्णय होगा और अभीष्ट मंतव्य प्राप्त कर लेगा" सर स्टेफोर्ड क्रिप्स को यह आदेश था "कि वह न केवल बहुसंख्यक हिदुओं से ही आवश्यक सहमति प्राप्त करें अपितु सबसे अधिक अल्पसंख्यक मुसलमानों से भी सहमति प्राप्त करें" भारत पहुंचते ही सर स्टेफोर्ड क्रिप्स ने प्रस्तावित मसविदा (Draft Resolution ) 23 मार्च 1942 को कार्यकारी परिषद के सन्मुख रखा। 29 मार्च को यह प्रस्ताव एक पत्रकार सम्मेलन में जनता के सामने रख दिया गया। इसके बाद पंद्रह दिन बातचीत चलती रही। परंतु असफल रहीं। महात्मा गांधी ने इसे "उत्तरतिथीय चेक" (Post –Dated Cheque) कि संज्ञा दी।

**प्रस्तावित मसविन्दा**

**अधिराज्य कि स्थापना (Establishment of Dominion)**

युद्ध की समाप्ती पर भारत को एक अधिराज्य का दर्जा दिया जाएगा तथा भारत राष्ट्रमंडल (Commonwealth) का सदस्य रहेगा। भारत को राष्ट्रमंडल की सदस्यता छोड़ने का भी अधिकार होगा।

**संविधान सभा की स्थापना (ConstitutionAssembly)**

युद्ध के बाद भारत के संविधान का निर्माण करने के लिए एक संविधान सभा की स्थापना की जाएगी। इसमें ब्रिटिश भारत तथा भारतीय रियासतों के प्रतिनिधि होने थे।

**रियासतों को पृथक रहने का अधिकार (Right Given to the states to keep Aloof)**

इंग्लैंड की सरकार संविधान सभा द्वारा बनाए गए संविधान को उसी रूप में स्वीकार कर लेंगी,परंतु यदि संविधान को जो रियासतें स्वीकार न करना चाहें उन्हें यह भी अधिकार था कि यदि कोई रियासत इस संविधान को स्वीकार करना चाहे तो उसे अंग्रेजों के साथ एक नई संधि करनी होगी।

**युद्धकालीन व्यवस्था**

इसके अतिरिक्त युद्धकालीन व्यवस्था के विषय में इस प्रस्ताव में यह कहा गया कि युद्ध के दौरान भारत के प्रति रक्षा विभाग पर ब्रिटिश सरकार का नियंत्रण रहेगा, परंतु भारत कि सैनिक तथा आर्थिक साधनों को संगठित करने की जिम्मेदारी भारत सरकार पर रहेगी।

क्रिप्स के इस प्रस्ताव के संदर्भ में डॉ. सीतारमैया ने लिखा है " इनमें प्रत्येक दल को प्रसन्न करने वाली बाते थीं। कांग्रेस को प्रसन्न करने के लिए इनकी पूर्व भूमिका में औपनिवेशिक स्वराज्य तथा ऐसी विधान परिषद का उल्लेख था जिसे प्रारम्भ में ही ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल से पृथक हो जाने का अधिकार दिया गया था। मुस्लिम लीग के बड़ी बात यह थी कि किसी भी प्रांत को भारतीय प्रांत को भारतीय संघ से अलग हो जाने काहक था। नरेशों को भी ऐसी आजादी प्रदान कि गई थी।'' फिर भी क्रिप्स प्रस्ताव किसी को भी संतुष्ट न का सका।

पंडित नेहरू ने लिखा है," मैं इन प्रस्तावों को जितना अधिक पढ़ा है। इस में निहित विचारों से उतना ही अधिक निराशा हुई।

महात्मा गांधी ने तो सर क्रिप्स से यह तक कह दिया, "यदि आपके प्रस्ताव यंही थे तो आपने आने का कष्ट क्यों किया। यदि भारत के संबंध में आपकी यंही योजना है तो आपको मेरा परामर्श है कि आप अगले ही हवाई जहाज से इंग्लैंड लौट जाएं।

**जनक्रांति कि शुरुआत**

पहली बात तो यह है कि मार्च 1942 में क्रिप्स मिशन कि विफलता से स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश सरकार युद्ध में भारत कि भागीदारी को तो बरकरार रखना चाहती है लेकिन किसी सम्मानजनक समझौते के लिए तैयार नहीं है। नेहरू, गांधी जैसे लोग भी थे, जो इस फासिस्ट विरोधी युद्ध को किसी भी तरह कमजोर करना नहीं चाहते थे। इस निष्कर्ष पर पंहुच गए थे कि और अधिक चुप रहना यह स्वीकार का लेना है कि ब्रिटिश सरकार को भारतीय जनता कि इच्छा जाने बिना भारत का भाग्य तय करने का अधिकार है। करो या मरो वाले अपने भाषण में गांधी जी ने साफ–साफ कहा था कि "मैं रूस या चीन कि हार का औजार बनना नहीं चाहता।" लेकिन 1942 के बसंत तक उन्हें लगने लगा था कि संघर्ष अपरिहार्य है। क्रिप्स कि वापसी के एक पखवाड़े बाद ही उन्होंनें कांग्रेस सिमिति के लिए एक प्रस्ताव तैयार किया, जिसमें ब्रिटेन को भारत छोड़ने के लिए कहा गया था तथा भारतीय जनता का आह्ववान किया गया था कि जापान का हमला हो,तो वह अहिंसक असहयोग करे। नेहरू अगस्त तक संघर्ष के खिलाफ रहें, पर बाद में वे भी सहमत हो गए।

**वर्धा प्रस्ताव**

जापान के बढ़ते हुए प्रभुत्व को देखकर 5 जुलाई, 1942 ई. को गांधीजी ने 'हरिजन' में लिखा "अंग्रेजो भारत को जापान के लिए मत छोड़ो, बल्कि भारत को भारतीयों के लिए व्यवस्थित रूप से छोड़ जाओ।'' गांधीजी ने अपने प्रस्ताव को स्वीकार न किए जाने कि स्थिति में चुनौती देते हुए कहा " मैं देश को बालू से ही कांग्रेस से बड़ा आंदोलन कर दूँगा।।'' 14 जुलाई 1942 ई. में कांग्रेस कार्य समिति की वर्धा में गाँधी जी के इस विचार को पूर्ण सर्मथन मिला कि भारत में सांविधानिक गतिरोध तभी दूर हो सकता है जब अंग्रेज भारत से चले जाएँ। वर्धा में कांग्रेस कार्य समिति ने " अंग्रेजो भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित किया। आंदोलन कि सार्वजनिक घोषणा से पहले 1 अगस्त,1942 को इलहाबाद में 'तिलक दिवस' मनाया गया। इस समय नेहरू जी ने कहा " हम लोग आग से खेलने जा रहे हैं। तथा ऐसी दुधारी तलवार का प्रयोग करने जा रहे है। जिसकी चोट उल्टी हमारे ऊपर भी पड़ सकती है।''

7 अगस्त, 1942 ई. को बंबई के ग्वालियाटैंक में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। इसकी अध्यक्षता अब्दुल कलाम आजाद ने की। नेहरू ने "भारत छोड़ो आंदोलन प्रस्ताव" पेश किया जिसको थोड़े संशोधनो के बाद 8 अगस्त, 1942 ई. को स्वीकार कर लिया गया कांग्रेस के इस एतिहासिक सम्मेलन में गाँधी जी ने 70 मिनट तक भाषण दिए। उन्होंनें कहा कि मैं आप को एक मंत्र देता हूँ "करो या मारो" जिसका अर्थ भारत कि जनता देश कि आजादी के लिए हर ढंग से प्रयन्त करे। बस इस बात का ध्यान रखे कि आंदोलन गुप्त या हिंसात्मक न हो। उन्होंने कहा "आप लोगों में से प्रत्येक व्यक्ति को आब से स्वतंत्र व्यक्ति समझना चाहिए इस प्रकार कार्य करना चाहिए कि मानो आप स्वतंत्र हो।मैं स्वतन्त्रता से कम किसी भी वस्तु से संतुष्ट नहीं होऊगा।" गाँधी जी इस अवतार के बारे में पट्टाभि सीतारमैंया ने लिखा है कि " वास्तव में गांधीजी उस दिन अवतार एवं पैगंबर कि प्रेरक शक्ति से प्रेरित होकर भाषण दे रहे थे।" इस भाषण के दौरान गांधीजी ने कहा था कि "हम अपनी गुलामी स्थाई बनाया जाना नहीं देख सकते।"

**गिरफ्तारिया**

8 अगस्त कि मध्य रात्री के बाद ही सरकारने कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं गिरफ्तार करने की योजना बनायी। 9 अगस्त की सुबह "आपरेशन जीरों आवर" के तहत कंगेस के सभी महत्वपूर्ण नेता गिरफ्तार कर लिए गए।

गांधीजी को पूना के आगा खाँ पैलेस में तथा कांग्रेस कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों को अहमदनगर के दुर्ग में रखा गया। सरोजनी नायडू और कस्तूरबा गाँधी को आगा खाँ पैलेस में रखा गया। जवाहरलाल नेहरू को अल्मोड़ा जेल,डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को बांकीपर जेल (पटना) तथा मौलाना अब्दुल कलाम आजाद को बांकुड़ा जेल में रखा गया। कांग्रेस को असैधानिक संस्था घोषित कर दिया। जुलसों,धरना,प्रदर्शन पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया।

**जनता और आंदोलन**

सरकार के इस कदम से जनता भड़क उठी और नेताओं की गिरफ्तारियों से नेतृत्व विहीन हैकर जनता तोड़–फोड़ में जुट गई। भारत छोड़ो आंदोलन को तीन चरणों में बाटा जा सकता है। इसमें से पहला,जो भारी और हिंसक था और जिसे शीघ्र ही कुचल दिया गया था। मुख्यतरू शहरी था और इसमें हड़तालें एवं अधिकांश शहरों में सेना और पुलिस के साथ झड़पे सम्मलित थीं। पहले की

भांति इस बार भी 9 से 14 अगस्त तक तूफान का केंद्र बंबई रहा था। कलकत्ता में 10 से 17 अगस्त तक हड़तालें रहीं, दिल्ली में हिंसक झड़पें हुई और अनेक लोग मारे गए और पटना में तो 11 अगस्त को सचिवालय के सामने होने वाले विख्यात संघर्ष के बाद दो दिनों तक शहर में कोइ कानून–व्यवस्था रही ही नहीं। दिल्ली में हिंसा 'मुख्य रूप से हड़ताली मिल–मजदूरों के कारण' हुई थी। टाटा स्टील प्लांट 20 अगस्त से 13 दिनों के लिए प्री तरह बंद हो गया। इस हड़ताल में मजदूरों का एक ही नारा था। कि वे तब तक काम पर नहीं लौटेंगे जब तक कि राष्ट्रीय सरकार बन नहीं जाती। अहमदाबाद में कपड़ा मिलों की हड़ताल साढ़े तीन महीनों तक चली। बाद में एक राष्ट्रवादी विवरणकार ने लिखा कि यह शहर 'भारत का स्तालिनग्राद' बन गया था। अगस्त के मध्य में आंदोलन का केंद्र बदलकर ग्रामीण क्षेत्रों में चला गया। बनारस,पटना और कटक जैसे केन्द्रों से संघर्ष के लिए कटिबद्ध विध्यार्थी गामीन क्षेत्रों में फैल गए। उन्होंने बड़े स्तर पर संचार व्यवस्था को नष्ट किया और गोरे प्रशासन के खिलाफ वस्तुतरू कृषक विद्रोह नेतृत्व किया। उनके नारे में 'थाने जलाओं', 'स्टेशन फूँक दो', 'अंग्रेजों भारत छोड़ो। वे रेल गाड़ियों का अपरहण करके उन पर राष्ट्रीय झंडे लपेट देते थे। ग्रामीण इलाकों में किसान पास के तहसील या जिला केन्द्रों पर बड़ी तादाद में इकठ्ठा होकर समस्त सरकारी प्रतिकों पर हमला बोल देते थे। सरकार गोलीय चलाती थी और दमनात्मक कारवाई कारती थी किन्तु इससे आंदोलन में और तेजी आ जाती थी। दो सप्ताह तक बिहार का तिरुहत सभांग देश के शेष भाग से पूरी तरह कटा रहा और वहाँ सरकार का किसी प्रकार का नामों–निशां तक नहीं रहा। उत्तरी और मध्य बिहार के दस जिलों में अस्सी प्रतिशत पुलिस थानों पर या तो आंदोलनकारियों का कब्जा था या उन्हें अस्थायी रूप से खाली करा लिया गया था। कहीं–कहीं यूरोपी लोगों पर हमलें भी हुए। पटना के निकट फतवां में रॉयल एयरफोर्स के दो अधिकारियों को भीड़ ने मार डाला। 18 अगस्त को पसराहा और 30 अगस्त को राइहार में दुर्घटनाग्रस्त हुए रॉयल एयरफोर्स के दो विमानों के कर्मचारियों को ग्रामीणों ने मुंगेर में मार डाला। विद्रोह के महत्वपपूर्ण केंद्र बिन्दु पूर्वी सयुक्त प्रांत में आजमगढ़, गाजीपुर, बनारस, बलिया और गोरखपुर तथा बिहार में गया, भागलपुर, सारण, पूर्णिया, शाहाबाद, मुज्जफरपुर, और चंपारण थे। आंदोलन कि बागडोर अच्युत पटवर्धन, अरुणा आसफ अली,राममनोहर लोहिया,सुचेता कृपालानी, छोटूभाई पुराणिक,बीजू पटनायक, आर. पी. गोयनका, जयप्रकाश नारायण जैसे और अखिल भारतीय नेताओं ने संभाल ली थी। ये लोग पैसा, बम, बारूद, हथियार, आदि सामग्री इकठ्ठा करते थे और देश भर में फैले अपने लोंगों तक पंहुचाते थे। करना क्या है, इसका निर्णय स्थानीय स्तर पर होता था। ये गुप्त या भूमिगत संगठन इस इलाकों में ज्यादा सक्रिय थे बंबई, पूना, सतारा, बड़ौदा, कर्नाटक, केरल, आंध्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के ही सदस्य ही आम तौर पर इस गतिविधियों का नेतृत्व कर रहें थे, पर गांधीवादी,फारवर्ड ब्लाक के सदस्य भी काफी सक्रिय थे। भूमिगत कारवाइयों में संग्लन लोंगों कि संख्या बेशक कम थी, पर उन्हें व्यापक सहयोग मिल रहा था। व्यवसायी वर्ग ने अपनी थैलिया खोल दी थी। उदाहरण के लिए मोरारजी ने अच्युत पटवर्धन के लिए रोज एक नई कार कि व्यवस्था कि औ गिरफ्तार होने से बचाया। इस भूमिगत आन्दोलन की मुख्य बात यह होती थी कि पुलो को उड़ाकर,टेलीग्राफ व टेलीफोने के तार काटकर तथा रेलों कि पटरी उंखाड़कर,संचार के माध्यम नष्ट कर दिए जाएँ। सरकारी तथा पुलिस अधिकारियों तथा पुलिस मुखबीरों पर भी कहीं–कहीं हमलें हुए। उन दिनो आंदोलन के समाचार पहुंचाना भी एक महत्वपूर्ण कान था। इस दृष्टि से सबसे नाटकीय मामला रहा। बंबई शहर के विभिन्न केन्द्रों से कांग्रेस रेडियो का गुप्त रूप से संचालन। इससे प्रसारण को मद्रास तक सुना जा सकता था। राममनोहर लोहिया नियमित रूप से रेडियो पर बोलते थे।

### समानान्तर सरकारे

विद्रोही 'राष्ट्रीय सरकार' का सर्वोत्तम विवरण मिदनापुर के तमलुक उपसभांग में मिलता है। इसके इतिहासकार सतीश सामंत जैसे स्थानीय कांग्रेसी नेता है। जो तमलुक जातीय के पहले 'सर्वाधिनायक'थे। तमलुक उपसभांग में पहली झड़प 8 सितंबर को हुई जब गाँव वालों ने पहल करके दानीपुर के एक मिल मालिक द्वारा चावल भेजें जाने के प्रयत्न को विफल किया और फिर राष्ट्रवादी सेवकों से मदद माँगी। 29 सितंबर को बड़े सुयोनिजीत ढंग से संचार दृसाधनों पर और पुलिस थानों पर एक साथ हमलें हुए। हमलें के स्थल तमलुक, महिषादल, सुताहाट और नंदीग्राम थे। किन्तु अन्य स्थानों पर भारी रक्त पात हुआ एक ही दिन में 44 लोग मारे गए। 17 सितंबर 1942 को स्थापित भूमिगत ताम्रलिप्त जातीय सरकार का प्रमुख कार्य हो गया। बाद में इस इस सरकार कि शाखाएँ, सुताहट, नंदीग्राम, महिषादल में भी स्थापित कि गई।

### सतारा (महाराष्ट्र)

की समानांतर सरकारे सबसे ज्यादा दीर्घजीवी साबित हुई भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत से ही यह क्षेत्र काफी सक्रिय रहा था। आंदोलन की पहले चरण में सरकार के स्थानीय मुख्ययालयों में हजारो लोगों का जुलूस निकाला गया। इसके बाद डाकघरों पर हमला, बैंको को लूट, टेलीग्राफ के तारों को काट देना आदि सिलसिला शुरू हुआ। वाई. बी. चव्हाण यहाँ के प्रमुख नेता थे। लेकिन 1942 के अंत 2,000 लोगों को गिरफ्तार कर लिए जाने से जनांदोलन की गति रुक गई। 1943 की शुरुआत से भूमिगत कार्यकर्ताओ ने अपने को पुसंगठित करना प्रारम्भ किया और लगभग छरू महीने में उनका संगठन तैयार हों गया। समानांतर सरकार की स्थापना की गई। नाना पाटिल इसके महत्वपूर्ण नेता थे। शराब बंदी लागू कर दी गई। गांधी विवाहों का आयोजन हुआ। गावों में पुस्तकालय खोले गए। सतारा की प्रतिसरकार 1945 तक कायम रहीं।

### बलिया

प्रथम समानांतर राष्ट्रीय सरकार चित्तू पांडे के नेतृत्व में बलिया और गाजीपुर दोनों ही स्थानों पर थोड़े समय के लिए स्थापित की गई। बलिया में दस पुलिस थानों पर कब्जा कर लिया गया।

### आंदोलन में शहादत

वैसे तो क्रांति के समय की गयी अलग–अलग कार्यवाहियों का लेखा–जोखा देना कठिन है। फिर बी दिसंबरतक सरकारी आंकड़ों से अनुमान हो जाता है। इस दौरान पुलिस ने अलग–अलग स्थानों पर कुछ 600 बार गोली चलायी। इससे 763 व्यक्तियों के मारे जाने और 1941 लोगों के आहत होने को स्वीकार किया। 63 पुलिसकर्मी मारे गये दो हजार से अधिक घायल हुए। 10 अन्य सरकारी मारे गये और 364 आहत हुए। 208 पुलिस थानों को क्षति पहुचायी गयी, 749 दूसरे सरकारी भवनों को काफी नुकसान हुआ। 545 सार्वजनिक भवन तोड़–फोड़ के शिकार हुए। बम विस्फोट की 664 घटनाओं की सूचना मिली और 1319 विस्फोटक सामग्री नष्ट की गयी।, 447 बार सडकों में तोड़–फोड़ की गयी, 173 बार सामूहिक जुर्माने लगाये गये। सरकार ने 2562 लोगों को कोड़े लगाने की सजा दी। 91836 लोगों को गिरफ्तार किया गया। 108 स्थानीय संस्थाओं को भंग कर दिया गया।

**तालिका 1:** 1942 के उपद्रवों में बिहार में मृत्यु, चोट लगने और संपत्ति के क्षतिग्रस्त होने से संबंधित आँकड़े

| वर्गीकरण | संख्या |
|---|---|
| पुलिस द्वारा गोलीबारी कि घटनाओं कि संख्या | 83 |
| मरने वालों कि संख्या | 134 |
| घायलों कि संख्या | 309 |
| भीड़ द्वारा मृत पुलिस कर्मचारियों कि संख्या | 9 |
| भीड़ द्वारा घायल पुलिस कर्मचारियों कि संख्या | 165 |
| क्षतिग्रस्त पुलिस स्टेशनों कि संख्या | 86 |
| गिरफ़्तार किए गए व्यक्तियों कि संख्या | 14,478 |
| क्षतिग्रस्त इमारतों कि संख्या | 145 |
| मृत कर्मचारियों कि संख्या | 15 |
| कोड़े मारने का दंड देने से संबंधित मामलों कि संख्या | 196 |

## विस्तार

विद्रोह का विस्तार पंजाब और उत्तर पश्चिम सीमा प्रान्तों में अधिक नहीं हुआ। केरल,मद्रास भी लगभग शांत ही रहे। बंगाल के मिदनापुर, बिहार,पूर्वीय उत्तर प्रदेश,ओड़ीसा और कर्नाटक में तस्वीर भिन्न थी। इनमें उग्रता थी,गति थी और व्यापक जन– सहयोग की शक्ति थी

## भारत छोड़ो आंदोलन को लेकर विभिन्न दलों की प्रतिक्रिया

भारत छोड़ो आंदोलन की कई दलों एवं लोगों ने आलोचना की। तत्कालीन भारतीय राजनीति दलों में साम्यवादी दल ने इसकी आलोचना की। मुस्लिम लीग ने भी भारत छोड़ो आंदोलन की आलोचना करते हुए कहा कि आंदोलन का लक्ष्य भारतीय स्वतन्त्रता नहीं वरन भारत में हिन्दू साम्राज्य कि स्थापना की मुस्लिम लीग के नेताओं ने ऐसे ब्रिटिश सरकार की सहायता की। कांग्रेस के उदारवादी को भी यह आंदोलन नहीं भाया। सर तेज बहादुर सप्रू ने इस प्रस्ताव को "अविचारित तथा असामयिक " बताया। राज गोपालचारी ने ब इसकी आलोचना की। अंबेडकर ने इसे 'अनुत्तरदायित्वपूर्ण और पागलपन भरा कार्य' बताया। हिन्दू महासभा और अकाली दल ने भी इसकी आलोचना की। पारसियों ने इस आंदोलन का समर्थन किया।

## आंदोलन की समाप्ती

1942 से 1943 ई तक यह आंदोलन भारत में चलता रहा। गांधीजी ने आंदोलन के हिंसात्मक होने का प्रायश्चित करने उद्देश्य से 10 फरवरी, 1943 ई, से 21 दिन का उपवास प्रारम्भ किया, जिसकी देश में तथा विदेशों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। मुस्लिम लीग के अतिरिक्त सभी दलों ने सरकार से, गांधीजी की बीमारी को देखते हुए, उन्हें रिहा करने का अनुरोध किया, किन्तु सरकार ने इस ओर ध्यान न दिया किसी प्रकार गांधी जी ने 21 दिन का उपवास सकुशल समाप्त किया, बाद में सरकार ने गांधीजी को 6 मई 1944 ई में उनकी बीमारी को देखते हुए छोड़ दिया, किन्तु अब तक आंदोलन अति क्षीण हो चुका था। और धीरे दृधीरे आंदोलन समाप्त हो गया।

## निष्कर्ष

इसमें कोई सन्देह नहीं कि पुर्ववर्ती आंदोलन से भारत छोड़ो आंदोलन कि तुलना करें तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जोश का तत्व कहीं ज्यादा था। भारत छोड़ो आंदोलन एक पूर्ण रूप से जनांदोलन था। इस आंदोलन में भारत के सभी वर्गों ने भाग लिया। यह आंदलन एक छोर से दूसरे छोर तक फैला था। भारत छोड़ो आंदोलन एक ऐसा आंदोलन था। जिसका नेतृत्व आम जनता ने किया। 8 अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति द्वारा पारित प्रस्ताव में साफ–साफ कहा गया था कि "ऐसा समय आ सकता है जब निर्देश जारी करना संभव न हो सके या निर्देश लोगों तक पहुँच ही न सके। अगर ऐसा है तो प्रत्येक स्त्री पुरुष जो इस आंदोलन में भाग ले रहे है, जारी किए गए निर्देशों के अनुसार अपने काम का खुद फैसला करें। इस ऐतिहासिक आंदोलन कि एक बड़ी बात यह रही कि इसके द्वारा आजादी कि माँग राष्ट्रीय आंदोलन कि पहली माँग बन गई। भारत छोड़ो आंदोलन असफल अवश्य रहा। परंतु जनचेतना जगाने में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस आंदोलन ने विश्व के कई देशों को भारतीय जनमानस के साथ खड़ा कर दिया।

## संदर्भ सूची


1. चंद्र, विपिन. मुखर्जी, मृदुला. आदित्य, पनिकर, क.न, महाजन, सुचेता, भारत का स्वतन्त्रता संग्राम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय,दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 1990, पृष्ठ, 366।
2. मजूमदार, रमेशचन्द्र, रायचौधरी, हेमचन्द्र, दत्त, कांलिकर. भारत का वृहद इतिहास, मैकमिलन, नई दिल्ली, 1954, पृष्ठ, 353।
3. चंद्र, विपिन, मुखर्जी, मृदुला, आदित्य, पनिकर, क.न, महाजन, सुचेता, भारत का स्वतन्त्रता संग्राम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 1990, पृष्ठ, 366।
4. बी, एल. ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास एक नवीन मूल्यांकन (1707 ई से वर्तमान समय तक), एस.चंद एंड कंपनी लि, नई दिल्ली, 1981, पृष्ठ, 409।
5. शुक्ल, रामलखन. आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 1982, पृष्ठ, 502
6. मित्तल, डॉ.एके, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास (1857 ई . से 1947 ई. तक), साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2007, पृष्ठ, 231
7. वहीं, पृष्ठ, 232
8. चंद्र, विपिन. मुखर्जी, मृदुला. आदित्य, पनिकर, क.न, महाजन, सुचेता, भारत का स्वतन्त्रता संग्राम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 1990, पृष्ठ, 366।
9. पांडे, एस. के. आधुनिक भारत, सुमित प्रकाशन, इलहाबाद, 2008, पृष्ठ, 377
10. वहीं, पृष्ठ, 377
11. मजूमदार, रमेशचन्द्र, रायचौधरी, हेमचन्द्र, दत्त, कांलिकर, मैकमिलन, नई दिल्ली, 1954, पृष्ठ, 355।
12. पांडे, एस.के. आधुनिक भारत, सुमित प्रकाशन, इलहाबाद, 2008, पृष्ठ, 377।
13. सरकार, सुमित, आधुनिक भारत (1885–1947), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृष्ठ, 414।
14. शुक्ल, रामलखन, आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, पृष्ठ, 1982, 823।
15. चंद्र, विपिन, मुखर्जी, मृदुला, आदित्य, पनिकर, क.न, महाजन, सुचेता. भारत का स्वतन्त्रता संग्राम,हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 1990, पृष्ठ, 371।
16. सरकार, सुमित. अनुवाद (सुशीला डोभाल) आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993, पृष्ठ, 421।
17. चंद्र, विपिन. मुखर्जी, मृदुला. आदित्य, पनिकर, क.न, महाजन, सुचेता. भारत का स्वतन्त्रता संग्राम, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय

निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 1990, पृष्ठ, 372।
18. पांडे, एस.के. आधुनिक भारत, सुमित प्रकाशन, इलहाबाद, 2008, पृष्ठ, 378।
19. मिश्रा, डॉ जग्गनाथ प्रसाद. आधुनिक भारत का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1974, पृष्ठ, 575।
20. शुक्ल, रामलखन, आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 1982, पृष्ठ।
21. मिश्रा, डॉ जग्गनाथ प्रसाद. आधुनिक भारत का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1974, पृष्ठ, 575।
22. पांडे,एस.के. आधुनिक भारत, सुमित प्रकाशन, इलहाबाद, 2008, पृष्ठ, 378।
23. वही पृष्ठ, 379।
24. मित्तल, डॉ.एके, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास (1857 ई. से 1947 ई. तक) साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2007, पृष्ठ, 20।
25. वहीं, पृष्ठ, 235।